हरिहरन बजरंग बाण गीत

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम विशेष ते, बिनय करै सनमान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान्॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमंत संत हितकारी।सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥

जन के काज विलम न कीजै।आतुर डोरि महा सुख दीजै॥

जैसे जंपि सिन्धु वहि पारा।सुरसा बंधन पति बिस्तारा॥

आगे जाय लंकिनी कथा।मारेहु टकरा गई सुर लोका॥

जय विभीषन को सुख दीन्हा।सीता निरखि परम पद लीन्हा॥

बाग उजारि सिन्धु महं बोरा।अति आतुर यम कतर तोरा॥

अक्षय कुमार मारि संहारा।लूम लपेटि लंक को जरा॥

लह समान लंक जरि गे।जय जय धुनसि सुर पुर महँ भाई॥

अब विलंब केहि कारण स्वामी कृपा करहुं उर अंतर्यामी॥

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता।आतुर होइ दुःख करहुं निपात॥

जय गिरिधर जय जय सुख सागर। सुर समूह समरथ भटनागर॥

ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।बैरिहिं मारु बज्र की कीले॥

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।महाराज प्रभु दास उबरो॥

ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो। बज्र गदा हनु विलम्ब न लावो॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपिसा।ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा॥

सत्य होउ हरि शपथ पायके।रामदूत धरु मारु धाय के॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा।दुःख पावत जन केहि अपराधा॥

पूजा जप तप नेम आचारा।नहिं जानत कछु दास गर्ल॥

वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।तुमरे बल हम दर्पत नहीं॥

पाय परौं कर जोरि मनावों।यह अवसर अब केहि गोहरावों॥

जय अंजनि कुमार बलवंता। शंकर सुवन धीर हनुमंत॥

बदन कराल काल कुल झलक।राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि बैताल काल मरीमार॥

विकी मारु तोहि शपथ राम की।राखु नाथ मरजाद नाम की॥

जनसुता हरि दास कहावो।ताकी शपथ विलम्ब न लावो॥

जय जय जय धुनि होत आकाश।सुमिरत होत दुःख दुःख नशा॥

चरण शरण करि जोरि मनावों।यही अवसर अब केहि गोहरावों॥

जोतु कहु चलु तोहिं राम दुहाई।पंय परौं कर जोरि बाजै॥

ॐ चं चं चं चं चपल चलंता।ॐ हनु हनु हनु हनुमंत॥

ॐ हं हांक देत कपि चंचल।ॐ सं सं सहं पराणे खल दल॥

अपने जन को तुरत उबरो।सुमिरत होय आनंद हमारो॥

येहि बजरंग बाण जेहि मारो।ताहि कहो फिर कौन उबारो॥

पाठ करै बजरंग बाण की।हनुमत् रक्षा करै प्राण की॥

यह बजरंग बाण जो जपै।तेहि ते भूत प्रेत सब कांपे॥

धूप देय अरु जपै सदा।ताके तन नहिं रहे कलेशा॥

॥ दोहा ॥

प्रेम विशेषहिं कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।

तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान्॥

🚩 जय बजरंग बली की!

🚩 जय श्री राम!

🚩 हर हर महादेव!